श्री राम नाम महिमा

अनमोल रतन

मंगल भवन अमंगल हारी,

द्रवहु सो दशरथ अजिर बिहारी।

मंगल भवन अमंगल हारी,

उमा सहित जेहि जपत पुरारी।
========

<u>श्री गणेशाय नमः</u>

प्रथम आदि गणेश का नाम में ध्याऊं

नमो नमः सरस्वती सुमरे सकल जहान

सीस झुकाऊँ विनय सुनाऊँ मैं मतिमंद अनजान

दया दृष्टि करो अपनी भक्ति दो इतना मांगू दान ।।

=================================

रामनाम है कृष्ण मुरार, रामनाम वेदों का सार ।

रामनाम है फल दातार, रामनाम है सरजनहार ।।

रामनाम है पालनहार, रामनाम से बेड़ा पार ।

रामनाम रचता संसार, रे मन राम तेरा आधार ।।

राम नाम जप रे मना, और कामना छोड़ ।

गुड़ही रूप या मन को दे रामनाम की डोर ॥1

रामनाम सदा अविनाशी, रामनाम आनन्द निवासी ।

राम नाम सदा सुख राशी, राम नाम काटे यम-फांसी ॥

राम नाम सर्व प्रकाशी, राम नाम जपें योगी सन्यासी ।

राम नाम को भक्ति भाती, राम जाने नहि जाति पाति ॥

राम राम जपके मना, करो राम संग प्रीत ।

बिना नाम श्रीराम के, कौन तुम्हारो मीत ॥2

राम नाम परम अपारा, राम नाम विदित संसारा ॥

राम नाम एक ही सहारा, राम नाम बिन झूठ पसारा ॥

राम नाम दुःख मेटन हारा, राम नाम है कष्ट निवारा ।

राम नाम है सबको प्यारा, राम नाम है सब से प्यारा ॥

राम नाम जप रे मना, क्यों मूले अभिमानी ।

राम नाम बिन एक समाना पंडित मूरख ज्ञानी ॥3

राम नाम है अग्नि भवानी, धरती आकाश पवन ग्रह पानी ।

राम नाम जप मन अज्ञानी, क्यों मूला मूरख अभिमानी ॥

राम नाम की करो कहानी, राम नाम बिन सोवे ना वानी ।

राम नाम की सार न जानी, राम राम कोटन गुन खानी ॥

राम नाम जप रे मना, राम नाम आधार ।

बिन सेवत हरिनाम के, धिग जीवन संसार ॥4

राम नाम प्रह्लाद उचारा, नरसिंह होके भगत उबारा ।

राम नाम लीला विस्तारा, बाल्मीक तप कीनो भारा ॥

राम नाम ने रावण मारा, आया शरण विभीषण तारा ।

राम नाम साचा दरबारा, राम नाम भय मेटन हारा ॥

राम नाम जप रे मना, पल पल होत सहाई ।

राम नाम की रचना सारी, जल थल रहा समाई ॥5

राम नाम की है सब माया, लख चौरासी भेद बनाया ।

राम नाम सब खेल रचाया, ब्रह्मा विष्णु पार न पाया ॥

राम नाम वेदों ने गाया, सब संतन को ज्ञान बताया ।

राम नाम ब्रह्माण्ड समाया, तिन देखा जिन नाम ध्याया ॥

राम नाम जप रे मना, रहन गई भई भोर ।

राम नाम पाहरा भया, भाग गए सब चोर ॥6

राम नाम है करता कारन, राम नाम है कष्ट निवारण ।

राम नाम भक्त जन तारन, राम नाम ही असुर संहारन ॥

राम नाम ही पार उतारन, राम नाम ही अधम उधारन ।

राम नाम ही काज सँवारन, राम नाम ही जन्म सुधारन ॥

राम नाम जप रे मना, थोड़ा जीना भाई ।

बिन सुमिरन श्रीराम के, जन्म अकारथ जाई ॥7

राम नाम सकल संसार, रे मन राम सर्व आधार ।

राम नाम है एक ओंकार, राम नाम ही सत करतार ॥

राम नाम सदा इक सार, गंगा जमुना निर्मल धार ।

राम नाम नाउ संसार, राम बिना डूबे मंझधार ।

राम नाम जप रे मना, मंद मति नादान ।

राम नाम प्रताप से, बल बुद्धि अरु ज्ञान ॥8

राम राम जगत में वास, गिरि कानन वायु जल घास ।

राम नाम मेटे यम त्रास, राम नाम बिन बृथा श्वास ॥

राम नाम सर्व प्रकाश, राम बिना तुच्छ हास विलास ।

राम नाम से पूरण आस, राम नाम बिन जीवन नाश ।

राम नाम जप रे मना, राम है सरजन हार ।

राम नाम है हरता कर्ता, राम है पालनहार ॥9

राम नाम जो नर गावै, बिन प्रयास हरि पद पावै ।

राम नाम जो कहे कहावै, राम कृपा से भक्ति पावै ॥

राम नाम में जो मन लावै, ताकि रक्षा कारन आवै ।

राम नाम जो सुख में ध्यावै, ताकि महिमा कौन बतावै ॥

राम नाम जप रे मना, जाका आदि न अन्त ।

ऋषि मुनि कोटन कहैं, राम नाम भगवन्त ॥ 10

राम नाम की प्रभुताई, राम नाम जग खेल रचाई ।

राम नाम की है अधिकाई, गौरा गणपति पदवी पाई ॥

राम नाम सदा सुखदाई, राम नाम ही अंत सहाई ।

राम नाम वन्धु प्रिय भाई, राम नाम बिन कौन सहाई॥

राम नाम जप रे मना, रहो राम में लीन ।

राम नाम धन पाए जो, फिर रहे क्यों दीन ॥ 11

राम नाम माया बिस्तारी, राम नाम की खेल न्यारी ।

राम नाम है पर उपकारी, राम नाम पिता महतारी ॥

राम नाम सुख सम्पत्ति सारी, राम नाम बिन सब दुख भारी ।

राम नाम जाके मुख जारी, ताके चरण कमल बलिहारी ॥

राम नाम जप रे मना, राम ही अन्त सहाई ।

राम बिना सब झूठे नाते, मात पिता और भाई ॥ 12

राम नाम का जाप सुखाला, राम नाम की फेरो माला ।

राम नाम सदा प्रति पाला, राम नाम तेरो रखवाला ॥

राम नाम है नीम दयाला, राम नाम काटे भव जाला ।

राम नाम अमृत का प्याला, राम नाम रस पी मतवाला ॥

राम नाम जप रे मना, राम नाम दातार ।

राम नाम को छोड़कर, भूला फिरे गँवार ॥ 13

राम नाम है एको करता, राम नाम सृष्टि का धरता ।

राम नाम है सागर तरता, राम सुमिर मन काहै डरता ॥

राम नाम है पालन करता, राम सुमरता सागर तरता ।

राम नाम ही सब दुख हरता, राम बिना चौरासी भरता ॥

राम नाम जप रे मना, राम है शीतल जल ।

एक नाम शुद्ध जाप ते, अडसठ तीर्थ फल ॥ 14

राम नाम है ब्रह्म आनन्दा, राम नाम जपो मन चन्दा ।

राम नाम का बाधं पुलन्दा, राम बिना मानुष तन गन्दा ॥

राम नाम है ज्योति चन्दा, राम बिना दो नैनन अन्धा ।

राम नाम बिन भूला धन्धा, राम जपो छूटे यम फन्दा ॥

राम नाम जप रे मना, धरो राम की ओट ।

राम नाम के जाप से, फल है कोटन कोट ॥ 15

राम नाम अमृत रस मीठा, राम नाम बिन षट रस फीका ।

राम नाम है आदि जुगादि, राम नाम है ब्रह्म अनादि ॥

राम नाम है सच्चा नाम, राम नाम बिन झूठे काम ।

राम नाम बिन झूठे भेख, राम जपे सो साचा देख ॥

राम नाम जप रे मना, राम भजो रे भाई ।

सकल जगत के स्वामी जाके चरण कमल सुखदाई ॥ 16

राम नाम भज मन हुँकारी, राम नाम करता रखवारी ।

राम नाम भक्त हितकारी, राम नाम जिन भीलनी तारी ॥

राम नाम अति सुखकारी, राम नाम की भक्ति प्यारी ।

राम नाम है संकट हारी, राम भजो मन कोटन बारी ॥

राम नाम जप रे मना, राम है परम सनेही ।

राम प्रभु अति कृपा कीनी, दीनी सुन्दर देही ॥ 17

राम नाम कई भक्त बचायो, ध्रुव बालक ऊँची पद पायो ।

राम नाम जप हृदय धयायो, ग्राह से गज के फँद छुटायो ॥

राम राम ने चरन छुआयो, गौतम नारि श्राप पठायो ।

राम नाम वामन बन आयो, बलि से पृथ्वी दान करायो ॥

राम नाम जप रे मना, राम जगत के ईश ।

जा को धयावैं बह्मा शंकर, बेद कहैं जगदीश ॥ 18

राम नाम कहे पवन कुमारा, लांघ गयो जल निधि अपारा ।

राम नाम बल बाग उजाड़ा, रावण सुत अक्षय को मारा ॥

राम सिमर लंका गढ़ जारा, राम नाम जप आयो पारा ।

राम नाम को हृदय धारा, पूजा करत सकल संसारा ॥

राम नाम जप रे मना, राम नाम है टेक ।

सर्व जगत है याचकौ, दाता राम है एक ॥ 19

राम नाम ने गणका तारो, राम नाम तारो कुमहारी ।

राम नाम सांवल तन धारी, नरसि भक्त को हुंडी तारी ॥

राम राम केते जत तारे, हरि भक्तन के नाम अपारे ।

राम नाम जप रे मना, आवै निशदिन काम ।

राम नाम के जाप से, मिले स्वर्ग का धाम ॥ 20

राम नाम सतयुग में सार, राम नाम त्रेता अवतार ।

राम नाम द्वापर विस्तार, राम राम भये कृष्ण मुरार ॥

राम नाम कलियुग के मांहि, राम नाम बिन मुक्ति नाहि ।

राम नाम जप रे मनो, धरो राम की आस ।

तुझ में तेरा राम है, ज्यों फूलों में वास ॥ 21

भूलला अक्षर चित्त नहीं लावैं, अपने जन को लाज बचावैं ।

हाथ जोड़ कर विनय सुनाऊँ, चरण कमल की भक्ति पाऊँ ॥

रोग मिटे सकल संसार, सुखी बसें सब के परिवार ।

दास कहै मैं अति गँवार, राम नाम तू बखशन हार ॥

तुम सा दाता कोई नहीं मुझ सा नहि कोई नीच ।

दास जान कृपा करो, भव सागर के बीच ॥

बार-बार वर मांगऊँ हरषि देहु श्रीरंग ।

पदसरोज अनुरागनो भगति सदा सत संग ॥

अरथ न धरम न काम रुचि गीत न चहऊँ निरवान ।

जनम जनम रति राम पद यह वरदान न आन ॥

श्रवण सुजसु सुनि आयउं प्रभु भंजन भव भीर ।

चाहि चाहि आरति हरण, सरन सुखद रघुबीर ॥

<u>प्रार्थना</u>

भगवन मेरा सहारा, तेरे सिवा नहीं है ।

आधार एक तू है, बस दूसरा नहीं है ॥

तू बन्धु तू सखा है तू बाप तू ही माँ है ।

तेरे सिवाय कोई माता पिता नहीं है ॥

वह कौन वस्तु लाऊँ जिससे तुम्हें रिझाऊँ ।

जो कुछ है सब है तेरा मेरा तो कुछ नहीं है ॥

मैं भी तो मैं नहीं हूँ मेरा कहाँ ठिकाना ।

सर्वस्व तू है भगवन तू क्या है क्या नहीं है ॥

<u>"आरती श्री गंगा माता की"</u>

जय गंगे माता बोलो जय गंगे माता।

जो नर तुम को ध्याता मन वांछित फल पाता—जय

चंद्र सो जोत तुम्हारी जल निर्मल आता।

शरण पड़े जो तेरी सो नर तर जाता—जय

पुत्र सगर के तारे सब जग को ज्ञाता।

कृपा दृष्टि तुम्हारी त्रिभुवन सुख दाता—जय

एक ही बार जो तेरी शरणागत आता।

यम की त्रास मिटा कर परम गति पाता—जय

आरती मात तुम्हारी जो नर नित गाता।

अजुर्न वही सहज में मुक्ति पद पाता—जय

आरती

तेरी आरती नंद के लाल मदन गोपाल में गाँवों कूंज गली

तेरी ०

सिर पर सुन्दर मुकुट सोहाना, तन मोतियन के भूषण नाना।

गल वैजयंती माल कि मदन गोपाल में गाँवों कूंज गली॥

तेरी ०

सुन्दर मुख पर लटक निराली, चंवर झूले बारी बारी।

माथे तिलक विशाल कि मदन गोपाल में गाँवों कूंज गली॥

तेरी ०

कानन कुंडल हीरे जड़त हैं, मुकट के नीलम जगमग

करत हैं।

कुंडलां वाले बाल मदन गोपाल मैं गाँवां कूंज गली ॥

तेरी ०

आओ प्यारे देर न लावो अपने भगतां नूं दरस दिखावो।

होंट है लाल गुलाल कि मदन गोपाल मैं गाँवां कूंज गली ॥

तेरी ०

श्रीराम-स्तुति

श्री रामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणं।

नव कंज लोचन, कंज मुख कर, कंज पद कंजारुणं॥

कंदर्प अगणित अमित छवि, नव नील-नीरज सुंदरं।

पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥

भज दीनबंधु दिनेश दानव दैत्यवंश निकंदनं।

रघुनंद आनंद कंद कौशल चंद दशरथ नंदनं॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणं।

आजानुभुज शर चाप धर, संग्राम जित खरदूषणं॥

इति वदति तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रंजनं।

मम हृदय कंज निवासु कुरु, कामादि खल-दल गंजनं॥

=================

जय श्री रघुनाथा जय जानकी नाथा,

दो कर जोड़ करूँ विनती प्रभु मेरी सुन बाता।

तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता,

तुम ही सजन सदाई भक्ति मुक्ति दाता॥

चौरासी प्रभु फंद छुड़ाऊ मेटो यम त्रासा,

निश दिन प्रभु मोहे राखो चरण संग साथा।

राम लक्ष्मण भरत शत्रुघन संग चारों भैया,

जग मग जयोत विराजे शोभा अति लंघा॥

हनुमत नाद बजावै नेवर ठमकैया,

कंचन थाल में आरती करत कौशल्या मया।

सीस मुकुट कर धनुष विराजे शोभा अति भारी,

दास प्रभु दर्शन को पल-पल बलिहारी॥

=====================

(श्री राम नाम जाप माला)

संकलनकर्ता :-

बाहरी अमर नाथ चोपड़ा, दीवान

-क्वाटर नं० 6, ऊपर की मंजिल, 55 दरियागंज

नई दिल्ली-110002 फोन 326835

दिनांक 10 मार्च, 1989

मूल्य : प्रतिदिन पाठ करना

इस किताब के इच्छुक व्यक्ति भी उपरोक्त पते पर सम्पर्क करें।

<u>हरि कीर्तन—</u>

श्री राम जै राम जै जै राम

श्री राम जै राम जै जै राम

जै राम जै राम जै जै राम

जै राम जै राम जै जै राम

श्री राम जै राम जय जय राम

श्री राम जै राम जय जय राम

=============